॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

# श्रीहंससुधा

रचयिता

श्रीहंसराज सिंघवी

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

# श्रीहंससुधा

रचयिता--

**श्रीहंसराज सिंघवी**

श्रीहंसराजसिंघवी की हवेली, त्रिपोलिया, जोधपुर (राज.)

सम्पादक--

अ० श्रीव्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य

श्री "श्रीजी" बड़ी कुञ्ज, वृन्दावन, मथुरा (उ. प्र.)

प्रकाशक--

**अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यचार्यपीठस्थ शिक्षा समिति**

निम्बार्कतीर्थ ( सलेमाबाद ) किशनगढ, जि० अजमेर (राज०)

माघ शुक्ल ५ मंगलवार (वसन्तोत्सव) दि० ८/२/२०११

वि० सं० २०६७ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०७

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
**अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ**
निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद अजमेर ( राज० )
फोन नं0 01497 - 227831

प्रथमावृत्ति सं० २००६

द्वितीयावृत्ति--२०००

मुद्रक--
**श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय**
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
**पाँच रुपये**

# समर्पण

हे सर्वनियन्ता सर्वाधार सर्वान्तर्यामी श्रीसर्वेश्वर ! आपही सभी प्राणियों को उनके कर्मानुसार भले बुरे कर्मों में प्रवृत्त करते हो, आपही जिसको अपनाना चाहो उसको सद्गुरु की शरण प्राप्त कराते हो और आपही उसकी बुद्धि को अपनी ओर आकर्षित कर, अपनी पराभक्ति दे, अपने स्वरूप और गुणों का साक्षात्कार कराते हो, हे प्राणेश्वर ? आप ही सबके प्राणपति हो, आप ही पति, पुत्र, माता, पिता, बन्धु रूपों से प्राणियों को सम्बन्धित कर, नियुक्त करते हो।

हे लीलाधर नटवर ! यह सभी संसार आपही की नाट्यशाला है, जिससे जैसा चाहो उससे वैसा ही अभिनय कराते हो, संसार में प्राणियों का कुछ भी नहीं सब कुछ आपही का है। प्राणियों का अहंत्व ममत्व आपही की लीला मात्र है । हे प्रभो ? इस संसार यात्रा के लिये आपही ने मेरे को लौकिक पति प्रदान कर मेरी संसार यात्रा के पूर्व ही उन्हें अपनी चरण शरण में लेकर आप हर्षित हुये हो लौकिक पतियों के भी अलौकिक पति ? आपही की प्रेरणानुसार रची हुई मेरे लौकिक पतिदेव कृत आपही की लीला सम्बन्धी इस ''हंससुधा'' को भी आपही लेकर उस अपने प्रिय भक्त सहित आप ही प्रसन्न हों।

वि० सं० २००६ समर्पिका-

आपकी अकिंचन किंकरी

**जीवणकुमारी**, जोधुपर (राज०)

# दो शब्द

श्रीहंस सुधा के रचयिता जोधपुर ओसवाल सिंघवी कुल के दिव्यरत्न श्रीकिशनराजजी के सुपुत्र थे और श्रीवच्छराजजी के दत्तक पुत्र थे, लाडकुमरीजी आपकी जननी और श्रीउमरावकुमरीजी दत्तक माता हैं, आपका जन्म वि० सं० १९४९ में और परमधाम २००५ के आषाढ मास में हुआ आपका घराना सदा से ही सनातनधर्मी एवं श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का अनुयायी रहा है, अतएव इस ग्रन्थ के आरम्भ और अन्त में अपने पूज्य गुरुदेव और आद्याचार्यश्री का कई स्थानों में आपने स्मरण किया है। यह घराना जोधपुर राज्य के प्रतिष्ठित पदाधिकारी और राज्य-प्रजा का बड़ा हितैषी माना जाता है, इस घराने के महानुभावों ने कई एक धर्म स्थान और विशाल-विशाल प्रासाद बनवाये हैं, धर्म स्थानों में श्रीगोपाल द्वारा (त्रिपोलिया बाजार जोधपुर) एक विशिष्ट स्थान है जो जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) की भेट है। हिन्दी-इंग्लिस आदि कई एक भाषाओं के ज्ञाता थे और हस्तरेखा और ज्योतिष के भी मर्मज्ञ तथा वेदपुराणादि शास्त्रों में निपुण थे। आपने जिस-जिस राज्यपद को सम्हाला उसका कार्य बड़े सुचारु रूप से संचालन किया, आपका निष्पक्ष दिया हुआ निर्णय कभी भी नहीं लौटा। राज्य और घराने के कार्यों में संलग्न रहने पर भी आपने भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी अनन्य भाव से उपासना की। आप कवियों

की गणना में आना नहीं चाहते थे अतः अपनी कविता के साधारण पत्रों पर चलती लिपि में ही नोट किये, जो कि बड़ी कठिनाई से पढ़े जा सकते थे, इस ग्रन्थ में कहीं-कहीं खड़ी हिन्दी और कहीं पर व्रज भाषा के भी शब्द आये हैं परन्तु अधिकतर राजस्थानी भाषा के शब्द हैं, इन कारणों से सम्पादन में बड़ी कठिनाई पड़ी, संशोधन भी जैसा चाहिये वैसा नहीं हो सका, अतः अशुद्धियों का रहना अधिक सम्भव है एतदर्थ पढने वाले सज्जन अपनी बुद्धि के अनुसार शुद्ध करके पढने का कष्ट करें, यद्यपि ग्रन्थकर्ता और उनके कुल का विस्तृत इतिवृत्त लिखने की हमारी इच्छा थी परन्तु स्थानाभाव से नहीं लिखा जा सका, ग्रन्थकर्ता की परमसाध्वी धर्मपत्नी श्री जीवणकुमरीजी ने इस ग्रन्थ को प्रकाशित कर उनकी चिरस्मृति और भक्तों का जो हित किया है वह धन्यवादार्ह है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वि० सं० २००६

विद्याभूषण सांख्य साहित्य वेदान्ततीर्थ-
**श्रीव्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य**
अधिकारी-
अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, सलेमाबाद
किशनगढ, अजमेर ( राजस्थान )

# हंससुधा एक उत्कृष्टकृति

"स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा" अर्थात् महाकवि गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी की मान्यता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम का गुणगान प्रत्येक प्राणी के मन को परमसुख एवं शान्ति प्रदान करता है। अतः विज्ञजनों को धन सम्पदा, यश के लिए आराध्य से कभी याचना नहीं करनी चाहिए। उनकी प्रसन्नता इसी में रहती है बिना मांगे अबोध शिशु की तरह सेवारत रहे। प्रभु तो उस पुत्रवत्सला माता की तरह हितैषी है जो हर समय सन्तति का ध्यान रखती है। निश्छल एवं असहाय भक्त को संकटापन्न देखकर श्रीहरि उसकी रक्षा के लिए आतुर हो जाते हैं फिर अतिसत्वर सहायार्थ प्रकट होते हैं। श्रीहरि के इसी वात्सल्य गुण को पढकर सन्तों से सुनकर जीवन में स्वयं अनुभव कर भक्तप्रवर श्रीहंसराजजी सिंघवी जोधपुर-राजस्थान निवासी ने स्वान्त सुख के लिए 'श्रीहंससुधा' नामक खण्ड-काव्य की रचना की है जिसमें लीला पुरुषोत्तम श्रीराधाकृष्णयुगल स्वरूप की अति विनयता के साथ नाम रूप गुण लीलाओं का वर्णन किया है। गोस्वामीजी ने "श्रीरामचरितमानस" की तरह आपने भी अपने अन्तःकरण में भक्तिसुधारस का समास्वादन करने के लिए इस ग्रन्थ की रचना की। यद्यपि यह रचना लघुकाय है तथापि इसमें भावगाम्भीर्य ऐसा है कि समस्त श्रुति पुराण इतिहास का सारतत्व संगृहीत है।

यह सुखद आश्चर्य है कि जिस परमार्थ तत्व को ऋषि-मुनि-तपस्वी सात्विक आहार-विहार के साथ एकान्त में निवास कर आत्मसात् करने की इच्छा करते हैं उसी परमतत्व का साक्षाद् अनुभव करने के लिए राजसी वैभवयुक्त प्रासादों में विविध भोगसामग्री को भोगते हुए भी जल में कमल की तरह निर्लिप्त भाव से प्रभु का गुणगान करना कवि हृदय की पावनता एवं परम निर्मलता प्रकट करता है। निश्चय ही यह दुष्कर कार्य है। किन्तु अनुपम होने से सबके लिए अनुकरणीय है। मन पर यदि नियन्त्रण होजाय तो कोई भी कार्य दुष्कर नहीं होता। श्रीहंसराजजी ने प्रस्तुत रचना में सोरठा, दोहा, पद्यों द्वारा विनयबत्तीसी, विनय बावनी और शिक्षामंजरी के नाम से तीन प्रकरण निर्धारित किये हैं। अन्त में विभिन्न रागों के पद भी लिखे हैं। प्रथम प्रकरण में आचार्यवन्दना

के पश्चात् नित्यनिकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण की मधुर लीलाओं का स्मरण करते हुए विशुद्ध निकुञ्ज भाव दर्शाया है। आप कहते हैं--

**"अन्तःकरण आकाश में देऊँ सेज बिछाय।**
**राधायुत पौढ्या करो हंसा रे मन मांय।।"**

हे राधारमण ! मैं मेरे अन्तःकरण (हृदय) रूपी आकाश में निर्मल बुद्धिरूपी सेज-शय्या की रचना करता हूँ। आप उसमें मेरे मानस रूपी तकिया के सहारे अपनी अनपायिनी आह्लादिनी शक्ति श्रीराधाजी के साथ निःशंक पौढ्या-शयन किया करो। कितना माधुर्य भाव है। इसी प्रकार द्वितीय प्रकरण विनय बावनी में ५२ दोहा हैं। इसमें भक्त कवि ने भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु को अपने कुल के इष्टदेव रूप में वन्दन करते हुए पूज्य सद्गुरुदेव निम्बार्काचार्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी के पादपद्मों का सभक्ति नमन किया है। इस प्रकरण में व्रजलीला, मथुरालीला और द्वारकालीला का वर्णन है। आप प्रभु की दीन दयालुता पर कहते हैं-"दीन सुदामा चावल चाख्या करि करि चाव। हंस कहै श्रीकृष्ण विन कौन दया दरियाव॥" अन्य प्रसंग में श्रीकृष्ण की भक्तवत्सलता का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं--

**"प्रण निज छांडत तूल सम, रखो भक्त की लाज।**
**टेक निभाई भीष्म की, भारत में यदुराज।।"**

महाभारत के विस्तृत प्रसंग को थोड़े शब्दों में कितने मार्मिक ढंग से दर्शाया-यह उनके गम्भीर शास्त्राध्ययन को दर्शाता है। इस प्रकार भक्ति-ज्ञान-वैराग्य-विनय आदि विविध भावों से श्रीहरि के अनुग्रह की अभिवाञ्छा करते हुए श्रीहंसराजजी ने अपने नाम को सार्थक बनाया। सांसारिक विषय सागर से भक्तिज्ञानादि रत्नों को उसी प्रकार उद्धृत किया है जिस प्रकार हंस नीर से क्षीर को निकाल लेता है। अतः "हंससुधा" एक उत्कृष्ट कृति है। सभी साधकों को इससे अवश्य प्रेरणा लेनी चाहिए।

**--वासुदेवशरण उपाध्याय**
दि० ८/२/२०११ व्या० सा० वेदान्ताचार्य
प्राचार्य-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

# हंस सुधा

## श्रीहंस विनय वत्तीसी

दोहा-

हंस सनक नारद मुनि, निम्बारक भगवान् ।
करि निज गुरुपद बन्दना, गाऊँ हरि गुण गान ।।१ ।।
कर जोड़े हंसो कहै, सुन ज्यो देव गणेश ।
दो बुद्धि निज दास को, सुजस कथूं परमेश ।।२ ।।
कृपा निधी सम नहीं, मो सम नहिं अज्ञान ।
विरद जानि दो हंस को, ज्ञान झलक भगवान ।।३ ।।
मात पिता भामिनि सहित, कृष्ण सुभाविक चौर ।
ऐसे प्रभु को हंस का, नमस्कार कर जोर ।।४ ।।
सुख दुख मनां समान में, भूलूं कबहुँन तोय ।
विनय हंस कान्हा इसी, करदे बुद्धि मोय ।।५ ।।
वसना उजड़े बास में, जो चाहो नन्दलाल ।
मम मन व्यसन उजाड़ करि, हंस वसो चिरकाल ।।६ ।।

कृष्ण डरावै हाउड़ो, मतना बाहरि जाय।
विनय हंस बैठे रहो, मन मन्दिर रै मांय।।७।।
कृष्ण जिमाऊ आपनें, व्यंजन बहुत बनाय।
विनय हंस बैठे रहो, मन मन्दिर रै मांय।।८।।
कृष्ण झुलाऊं पालणै, हालरियो हुलराय।
विनय हंस झूलत रहो, मन मन्दिर रै मांय।।९।।
अन्तःकरण आकाश में, देऊं सेज विछाय।
राधा युत पोढ्या करो, हंसा रै मन मांय।।१०।।
शुद्ध प्रेम निजजन लखै, सवविधि पूरण काम।
धर्‍यो दयालु आपरो, गोपीवल्लभ नाम।।११।।
आंख मिचौनी खेल में, कहलाते उस्माद।
हंस न छुपणों सह सके, आवो करतां याद।।१२।।
नाम देवकी छान तुम, छावत की नहीं लाज।
किण कारण दूरा रहो, हंसदास यदुराज।।१३।।
कालिय नाग हुतो असुर, अपणायो धरि चरण।
हेलो हंसो दे रह्यो, सांवल राखि शरण।।१४।।
द्रुपद सुता ताना दिया, आप बचाई शान।
अब हंसारी वीनती, कृष्ण ? सुनो दे कान ।।१५।।
अर्जुन रो रथ हांकतां, मन नहिं कियो मलीन।
खेवत नौका हंस की, ढील कवन विधिकीन।।१६।।

विरज बचायो साँवरा, कर पर धरि गिरिराज।
वह कर अब शिर हंसधरि, लाज रखो व्रजराज।।१७।।
ऊखल वंधि जु मिटादियो, यमलार्जुन रो ताप।
हंसा रो मुश्किल नहीं, हरणों भक्त सन्ताप।।१८।।
हनत कंस भायां सहित, देर करी नहिं आप।
हंसारा अब शत्रुषट्, क्यों न हनो मां बाप? ।।१९।।
दया सिन्धु करि के दया, तार दियो गजराज।
कहा कृष्ण नहिं आइहैं, हंसदास रै काज।।२०।।
चकित भयो अक्रूर लखि, एक रूप दो ठाम।
अब तो माया खेंच लो, हंस जपै तव नाम।।२१।।
जो दावानल पान करि, राखे बछड़ा ग्वाल।
तो पालो कुल हंस को, तब जाणूं गोपाल।।२२।।
निशिदिन मुहिं घेरे रहै, सजन सनेही साथ।
काटो फन्दा मोहरा, हंस कहै सुण नाथ।।२३।।
कारज ले ले करि किया, जाणत सब जग मांहिं।
हंसो डरत सुभाव सों, देखैं को कछु नांहि।।२४।।
गिड गिडाय हंसो कहै, सुणौ गरीब निबाज।
अपणों करि के जाणिये, वांह गहे की लाज।।२५।।
आना कानी गर करो, कहो हंस ने साफ।
राधा पांव पखालस्यों, फिर तुम करस्यो माफ।।२६।।

हुण्डी नरसी भक्त की, दी सिकारि महाराज।
दया हंस पर कीजिये, वरदायक यदुराज।।२७।।
जिमि रुक्मण रो हरण करि, तनरो मेट्यो ताप।
इमि हंसारी बासना, हरो वेगि प्रभु आप।।२८।।
जिमि गुरु पुत्र जिवाय करि, दिखलाये नन्दलाल।
इमि हंसा नें भक्ति दे, करहु सनाथ दयाल।।२९।।
हंस पायो सिंघि कुल, लाड कृष्ण मां बाप।
महिमा पितु के नाम की, सार्थक करदो आप।।३०।।
टींटी रा युध बीच में, इंडा राख्या आय।
इमि हंसा ने पालज्यो, करो कृष्ण ? धणि याय।।३१।।
विषरो अमृत करि रखी, मीरांरी मरजाद।
हंसारी बिगडी वखत, रखलीज्यो हरियाद।।३२।।
बिनय बतीसी आपरी, वणवाई प्रभु आप।
तारण भवसों पतित तन, मेटत दिल रो ताप।।३३।।

इति श्री सिंघवी हंराज कृत-

विनय बत्तीसी सम्पूर्ण।

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्राय नमः ॥

# अथ विनय वांवनी प्रारम्भः

दोहा-

मेरे कुल के ईष्ट श्री, सर्वेश्वर भगवान।
पालैं पोषै भक्त को, दूरि करैं अज्ञान।।१ ।।
श्रीनिम्बारक सम्प्रदा, जगद्गुरुन को धाम।
पूज्य चरण मेरे गुरु, श्रीजी श्री घनश्याम।।२ ।।
नृपति द्वार ठाड़े रहैं, जिनके दर्शन काज।
उन हरि गुरु के हाथ है, हंसदास की लाज।।३ ।।

सोरठा-

धन्य धन्य गुरु आप, नमस्कार चरणन करूं।
जिन चरणन परताप पाई भक्ति श्रीकृष्ण की।।४ ।।

दोहा-

राधा माधव पद कमल, ध्यान हिये में धार।
विनय वांवनी रचत है, हंस बुद्धि अनुसार।।५ ।।
कौन सुनै किस से कहूँ, पतित उधारण हार।
हंसो है ऐसो पतित, लीज्यो विरद विचार।।६ ।।

गोपिन के घर ग्वाल संग, चोर चौर दधि खाय।
हंस कहै सुण सांवरा, लीला देहु दिखाय।।७।।
खा मिट्टी मुख में जगत्, दिखा मातु दियो ज्ञान।
बलिजाऊं वा रूप की, हंस विराट महान।।८।।
रास रच्यो वृन्दा विपिन, लिये राधिका साथ।
वह लीला दिखलाय दो, हंसो जोडै हाथ।।९।।
महादुखी द्रोपद सुता, की तुम सुनी जु टेर।
कितीक वेर लगायस्यो, अब हंसारी वेर।।१०।।
व्यसन डुवोवत हंस कों, जगसमुद्र के मांय।
कृष्ण आय गज जिमि करो, जल्दी मोर सहाय।।११।।
खोटो खरो जु आपरो, जो हंस न तरजाय।
पतित उधारण नाम की, महिमा तब घटि जाय।।१२।।
दरशन हित हंसो भ्रमै, लगा करि दौड़।
कुञ्जन में करसीं कृपा, कृष्ण राधिका जोड़।।९३।।
तू अरु मैं जब दोय हैं, देवो भक्ति अपार।
मैं मिटते कछु नहिं कहुँ, थारो बिरद विचार।।१४।।
चरण आसरो चहत हूँ, और न दूजो काम।
जन्म सफल हंसो हुवै, वगसि दया को धाम।।१५।।
जिससे तुम राजी रहो, करूं कृष्ण उपचार।
भोलो हंस न समझता, कहदो क्या दरकार।।१६।।

प्रेम नेम समझूं नहीं, दूं गाली दो चार।
अगर यही सेवा धरम, कृष्ण उतारो पार।।१७।।

सोरठा-

तुहीं तात अरु मात, हंसा के सब कुछ तुही।
औरन कोय दिखात, जिसका जाकर शरण लूं।।१८।।

दोहा-

कृष्ण रंग तैं हृदय मम, रंजित करि यदुराय।
करु अब राधारूप सम, हंस कहै अकुलाय।।१९।।
चांद सितारे सूर्य सब, चालत जिसकी ओर।
स्वामी हंसा का वही, नटवर नन्दकिशोर।।२०।।
कृष्ण झुलावत पालणैं, नन्द भवन में मात।
दिल में वही अपूर्व सुख, कापै वरण्यों जात।।२१।।
कामी के जिमि बाम प्रिय, किरपण के जिमि दाम।
हंसा को इमि प्रिय लगो, कृष्ण राधिका नाम।।२२।।
इस असार संसार में, कृष्ण नाम है सार।
वसो हंस के मुख सदा, दुखबारिद दो टार।।२३।।
कृष्ण निहारै वाम को, है ताको विश्वास।
जग तारण काटण करम, भक्ती करण प्रकाश।।२४।।
राधा रुक्मिणि सामनें, कृष्णचन्द्र रे द्वार।
तन मन धन अर्पण करूं, आरति लेऊं उतार।।२५।।

भक्त शिरोमणि थे कियो, मुसलमान रसखान।
प्रेम सूत्र में बंधत हो, राखण जन रो मान।।२६।।
ऊंच नीच गिनते नहीं, हंस भणै यदुराय।
त्यागे मेवा राज घर, साग विदुर घर खांय।।२७।।
जाति पांतिरो नेम नहिं, प्रेमहिं रो आधार।
हंस कहै कारण यही, लेत प्रभू अवतार।।२८।।
दीन सुदामा चावल्या, चाख्या करि करि चाव।
हंस कहै श्रीकृष्ण विन, कौन दया दरियाव।।२९।।
हंसो व्याकुल हो रह्यो, अवतो दर्श दिखाय।
करुणा निधि करुणा करो, तड़फि तड़फि जियजाय।।३०।।
मखन चौर कहते कोई, कई कहैं चित चोर।
हंस कहै कुछ भी कहो, मेरे हो शिरमौर।।३१।।
आवैं शरण जो आपरै, कहि कहि दीन दयाल।
देवो उनको मोक्ष पद, धन धन हो गोपाल।।३२।।

सोरठा-

दुर्वासा री रीष, विन कारण अम्बरीष पर।
सह न सकी भगवान, सहन करी जो भृगुलता।।३३।।
हंस करत अपराध, देखत सुणत न है कछु।
है भव तरण अगाध, एक भरोसो कृष्ण रो।।३४।।
पथर पुजाया आप, मान इन्द्र को भंग करि।
लीला कृष्ण अमाप, देवादिक समझैं नहिं।।३५।।

## दोहा-

कर्म भुगावन वनत हो, पूरे मायाधीश।
अशरण को लेवें शरण, हैं दयालु जगदीश ।।३६ ।।
हंस तुम्हारो नाम प्रभु, सर्वेश्वर भगवान।
निकलत सच्चे भाव से, निश्चय हो कल्याण ।।३७ ।।
इत योगेश्वर वनत हो, उत कहलाते जार।
यह वड अचरज हंस का, मेटो करुणाधार ।।३८ ।।
सब तेरा है सृष्टि में, कहते मेरा तात ?
किस कारण से होत है, यह अचरज की बात ।।३९ ।।
उत्तम कुल में जन्म ले, कीनां काम मलीन।
किण विधि हंसहिं तारिहो, करदो कृष्ण यकीन ।।४० ।।
जोर रह्यो नहिं जीभ में, हार्‌यो करत पुकार।
किण कारण अब छुपत हो, देदो दर्श मुरार ।।४१ ।।
प्रण निज छांडत तूल सम, रखो भक्त की लाज।
टेक निभाई भीष्म की, भारत मैं यदुराज ।।४२ ।।
गोपालण री कामटी, नाम कहत गोपाल।
गर्व होत इस कारणैं, धन धन दीनदयाल ।।४३ ।।
मैं अधमन शिरमौर हौं, अधम उधारण आप।
हंसो निर्भय मोहनां, तब चरणन परताप ।।४४ ।।
ये कुच हैं स्तन पूतना, जहर देयँ हंसराज।

रोकण मैं असमर्थ हूँ, थे टारो व्रजराज ।।४५ ।।
पर वल माया आपरी, घेरत है हंसराज ।
विलखि विलखि बिनती करूं, टारो श्री व्रजराज ।।४६ ।।
विचित्र लीला आपकी, पार न पाय अनन्त ।
कबहूँ सिंघ भूखां मरै, अजगर पेट भरन्त ।।४७ ।।
भृंगी कबहुँ न वीसरै, अलिकुल रो अहसान ।
सायुज्य मुक्ति देत तुम, भूलूं किमि भगवान ।।४८ ।।
लेन चहत चरणन जिसे, हरते माया गर्व ।
हंस रहै मजबूत तव, कृष्ण देत हैं सर्व ।।४६ ।।
सब के घट में बैठ कर, करो प्रेरणा आप ।
हंसारा चितनैं प्रभु ? क्यो न करो थे साफ ।।५० ।।
भला बुरा सब जीवरा, स्वामी तुम यदुनाथ ।
हंसो क्यों चिन्ता करें, लाज तुम्हारे हाथ ।।५१ ।।
बण बाई यह बांवनी, दे बुद्धी यदुनाथ ।
वार वार कर जोडि अब, हंस नवावै माथ ।।५२ ।।

इति श्री सिंघवी हंसराज कृत--
विनय बांवनी सम्पूर्ण ।

कवित्त-

भक्ति मुक्तिठाम श्रीपरशुराम देवजू की गादी,
है सलेमाबाद जहां पाप ताप कोपहीं।
कोटि कोटि जन्म सुकृत उदय होय,
तातैं पावैं महाभागी जन सेवा सजापहीं।।
जहां कलिकाल के अंधियारे के तिमिर हर,
वृन्दावन देवजू प्रकट प्रभु आपहीं।
दीन के दयाल मोसी पतित निहाल कीनी,
लीन्ही अपनाय अब बन्दौ यहि छापहीं।।१।।

( श्रीसुन्दर कुमारीकृत रसपुञ्ज )

# अथ शिक्षा मंजरी

सोरठा-

निशि दिन हरि रो ध्यान, कपट विना हंसा करो।
भेट करण भगवान, सुगम राह दीसी यही ।।१ ।।

दोहा-

जाण अजाणक भेद नहिं, निकले मुख से नाम।
देते कुल को मोक्ष पद, कृष्ण दया के धाम ।।२ ।।
हंस हि लगत सुहावणो, कान्हा छोटो नाम।
अघविनश तर जावसी, जो जपसी निष्काम ।।३ ।।
उडतो पंछी देखियो, जावत जीवन दिट्ठ ।
हंस कृष्ण के भजन से, मुखडो करले मिट्ठ ।।४ ।।
थांरी म्हांरी करत जन, भूल्या इस संसार।
कृष्ण वचन गीता सुधा, पढि सुनि उतरो पार ।।५ ।।
जो जन चाहे भक्ति रस, पढले कृष्ण चरित्र।
हंस कहै भवतरण को, मंत्र यही है मित्र ।।६ ।।
जब जब विपदा हंस कह, आवे घणी उदण्ड।
तव तव चित्त से कृष्ण नें, क्यों न भजो छलछंड ।।७।।
जीव घणों दुख पावतो, घेरि लियो वहुपाप।
लगत हंस सुखियो भयो, कृष्ण नाम की छाप ।।८ ।।

जैसे परखै प्राण को, स्वा सा राको चीज।
हंसा जन्म सुधार हित, कृष्ण नाम है बीज ।।६ ।।
निज दासन के अघ करम, प्रभु अपने पर लेत।
या कारण है कृष्ण को, तन सांवल मन श्वेत ।।१० ।।
उग्रसन पितु कैद करि, ले मथुरा को राज।
बे बुधि कैसी कंस री, वैर कियो व्रजराज ।।११ ।।
सात सुवन वसुदेव के, हने कंस निज हाथ।
अवतारियो अष्टम समय, पूर्ण कला यदुनाथ ।।१२ ।।
कारागृह में परगट्यो, रवि शत कोटि प्रकाश।
लखि दम्पति समझतभये, आयो पूरण आस ।।१३ ।।
आज्ञा ले वसुदेव पितु, चाल्यो शिशु धरिमाथ।
उठि ऊंची यमुना हुई, छूकर चरण सनाथ ।।१४ ।।
शिशु लिटाय करि ले चल्यी, यशुमति दुहिता साथ।
कारागृह में आयकर, दिवी कंस के हाथ ।।१५ ।।
उसने शिल के ऊपरें, पटकी जोर जमाय।
हाथ छुटि आकाश खढि, बोली वचन दुखाय ।।१६ ।।
मेरे मारे होय क्या, सुनो कंस मन लाय।
काल तिहारी नन्द घर, खेलत पलना मांय ।।१७ ।।
करले भक्ति कृष्ण की, रोम रोम कहि नाम।
जैसे हनुमत के हृदय, अंकित रघुवर नाम ।।१८ ।।

सिध करता कारज धणां, मुक्ति कारक श्याम।
हंस कहै चित में धरो, अटल भक्ति विश्राम।।१६।।
रत्ता कई बताविया, गीता में गुरु ज्ञान।
हंस भक्ति से पाव ही, प्रेम रूप भगवान।।२०।।
उदाहरण देखो किते, धेनुवकासुर कंस !
हंस कहै मालिक इस्यो, प्रकट्यो यदुकुल वंश।।२१।।
आठ वर्षरी वयस मैं, रच्यो कृष्ण महारास।
निर्विकार निर्लेप पर, जग में करत प्रकाश।।२२।।
गिरिधर गोपी हृदय पर, दीखत पुष्प समान।
हंस कहै वे सवल हैं, अबला कित भगवान।।२३।।
रीझि खीजि दोनों भली, करते कृष्ण प्रकाश।
अटल भक्तिरीझत मिलत, खीजत निज उर वास।।२४।।
रसना तू क्यों नहिं रटै, गुण अपार गोपाल।
हंस कहै नहिं मानसी, खासी यमरी मार।।२५।।

सोरठा-

हंस कहै सुण हाथ, कर सेवा प्रभु चरण की।
तू तब होय सनाथ, फिर मोको नहिं पावसी।।२६।।
चरणां बिनती मान, ले चालो दर्शन करण।
हंस कहै कल्याण, करसीं राधा कृष्ण जी।।२७।।

दोहा-

चक्षु ? दया करि हंस पै, देखो पलक निवारि।
जोड़ी राधा कृष्ण की, सार यही संसार ।।२८ ।।
नर जो जाण अजाण में, कर दे कृष्ण उचार।
हंस कहै उस जीव का, होवे वेड़ा पार ।।२९ ।।
नर तन भगवत देय कै, किया वड़ो उपकार।
हंस कहै भूलै उसे, धिक्धिक वे नरनार ।।३० ।।
कृष्ण कृष्ण रटते रहो, निश्चय हिय में आन।
हंस कहै तरि जावस्यो, यही कृष्ण फरमान ।।३१।।
अजामिल मरते समय, कह्यो पुत्र नाराण।
हंस कहै प्रभु तारियो, लीनों नाम अजाण ।।३२ ।।
गणिका सुवा पढावतां, तरगई आपों आप।
हंस भरोसो अटल है, कृष्ण नाम परताप ।।३३ ।।
गर्भवास विलखत रहां करांजु झूंठा कोल।
हंस कहै प्रभु आग लै, किण मूंडा सूं वोल ।।३४ ।।
द्वारावति वसिवो भलो, भलो यमुन जलपान।
हंस कहैं भक्ती भली, कृष्ण चन्द्र भगवान ।।३५ ।।
वैर भाव से जो भजै, अहो कृष्ण नन्दलाल।
पावत देखो परम पद, कंसादिक तत्काल ।।३६ ।।
भक्त काज भागत फिरै, कृष्ण करैं नहि देर।
हंस कहै प्रत्यक्ष लखि, द्रुपदा गज की बेर ।।३७ ।।

निज अपराधन लखत प्रभु, गणत भक्त अपमान।
ऐसो मालिक एक है, कृष्णचन्द्र भगवान ।।३८ ।।
कृष्ण सरीखो कृष्ण है, और न दूजो देव।
हंसा इक सांवरो, करत राधिका सेव ।।३९ ।।
पांच तत्व सब लोक पर, अरु जितने ब्रह्माण्ड।
जीव चराचर जगत पर, करता कृष्ण कमाण्ड ।।४० ।।
कलियुग मैं तारण मुदै, नाव कृष्ण रो नाम।
यों वतरावैं भागवत, करलो हंसा काम ।।४१ ।।
राधा सम माता नहीं, कृष्ण जिस्यो नहिं वाप।
पालत सव जग पुत्रवत्, टारत जन मन ताप ।।४२ ।।
जग की ममता छोड करि, कृष्ण चरण शिरधार।
हंस कहै सम दृष्टि बन, करल वेडा पार ।।४३ ।।
जो तूं अस निर्वल हुवो, करत न वने उपाय।
शरणें आजा कृष्ण के, हंस मुक्त हो जाय ।।४४ ।।
लिखियो पढ़ियो हो नहीं, विंध्यो मात के बाण।
रीझे ध्रुव विश्वास पर, अपनायो नाराण ।।४५ ।।
आत्म समर्पण है अजव, करले जो किहिं भाय।
धन वो नर संसार मैं, हंस मिलै प्रभु मांय ।।४६ ।।
जिण पर करते हैं दया, श्री राधा गोपाल।
तिनको ही सद्गुरु मिलैं, हंसा परम कृपाल ।।४७ ।।

जग में मारग बहुत हैं, हरि तोषण के काज।
पर निम्बारक मगभलो, हंस सवनि शिरताज ।।४८ ।।
वेद शास्त्र मरजाद युत, सनकादिक उपदेश।
भगवत् सेवा भाव ही, हंसा रे आवेश ।।४९ ।।
रहै अमानी आप तो, औरों को दे मान।
सब में सर्वेश्वर रमत, देख्यां हो कल्याण ।।५० ।।
श्रीघनश्याम शरण गुरु, परशुराम पुरधाम।
उनकी कृपा से हंसनैं, पायो सुख विश्राम ।।५१ ।।
हंसारो मन सुध करण, भक्तां रै चित चाव।
शिक्षा मञ्जरि ज्ञान दे, बणबाई यदुराव ।।५२ ।।
इसी हंसरी बुद्धि कहां, इण मग चलै हमेश।
कियां भरोसो आपहिं, बुधि देवै सर्वेश ।।५३ ।।

इति श्री सिंघवी हंसराज कृत-
शिक्षा मञ्जरी सम्पूर्ण।

# अथ श्री पदावली

१ राग भैरवी-

काहु विध मिलजाना गिरधारी।
जप नहिं कीनों तप नहीं कीनों किया न यज्ञ मुरारी ।।१ ।।का०
दुर्व्यसनों में लगत ही रहियो अवगुण मोमें भारी ।।२ ।।का०
कौन सुनैं कापे अब जाऊँ तुम्हें छांड अघहारी ।।३ ।।का०
हंसा री नाव पड़ी समदें विच खेवैला तुंही वनवारी ।।४ ।।का०

( २ )

थोरे सावरिया लागी प्रीतरे,
जीव एक तन दोय समझ मन मांयरे ।।१ ।।
रास रचालो कानाजी जमुना पे चालरै,
हिडो हिडाय आप दीजियो ।।२ ।।

३ राग मांड-

थांने विनऊं वारम्वार म्हांने तारदीज्योजी।
थांने जोंडू दोनों हाथ म्हांने पार कीजो जी ।।
कोल उदर में मैं किया जी कृपा करी तुम नाथ।
वाहरि काड्यो नरक से भूल गयो वह पाथ ।।१ ।।म्हांने०
वालपणों रमतां गयो जी ध्यायो नहीं रमेश।
इस कारण अंधेर में भटकत रह्यो हमेश ।।२ ।।म्हांने०
युवापणा में काम बश रह्यो बाम लिपटाय।
अवगुण म्हारा वीसरो सांवल करो सहाय ।।३ ।।म्हांने०

बूढा पे परवश रह्यो रोगां कियो शिकार।
सुधिनां रही शरीर की कुण रटतो करतार।।४।।म्हांने०
फांसा पडसी मोतरा आसी जम रा दूत।
एक भरोसो आप रो हंसो है मजबूत।।५।म्हांने०

४ राग-

टेर–म्हारा कृष्ण जी दयालु रे आवो अवलारी भीड।
कंईथे पोढ्या जायनें राण्यां री सुख सेज।
कारण इण अवलाकनें करो आवती जेज।
मैं तो ऊकी अरज गुजारूं रे मैं तो यैठी वाटां जोऊ रे।।
कंई थे दोड्या गजकनें करणें आर्त उधार।
अवलानें रख भूल में आवत कीनी वार।
हरि जी अव तो बिरद विचारो रे।।आवो०।।
कंईथे गिरि लीयां खडा विरज वचावण काज।
हँसी कराकर मांहरी आवोला यदुराज।
प्रभुजी बातां उडसीं थारी रे ।।आवो०।।
उते दुष्ट गज सम वली इत मैं अवला नारि।
चीर खेंचि नंगी करत देखत पति परिवार।
मैं तो राय रोय अव तो हारी रे ।।आवो०।।
कंईथे थारा कान मैं डाललियो है तेल।
अवै लगावण देर मैं सतम हो जासी खेल।
कुण कहसी विपत विडारी रे।।आवो०।।

५ राग-

टेर–थांसु और न मांगुरे म्हारी रांखो जग में लाज।
अन्न नहिं मांगु धन नहिं मांगु मांगु न वहु परिवार।
निज भगतांरी सेवा मांगु राखो कृष्ण मुरार ।।१।।थांसु०
अंत समय जमुना तट मांगु अरु गंगा जल पान।
जुगल जोडीरी झांकी मांगु मधुर वंसीरी तान।।२।।थांसु०
सुणो अरज हंसराज की रे मोहन यदुकुल मोड़।
दास समुझ निज आस रो रे दो चरणों में ठोड़ ।।थांसु०

६ राग छपर कुराथी

जोवोतो अंदाता थांरी वाटडी रे देवोनीं दरसण आय,
हांरे प्रभु आय, अब व्रज आयजा राधारा मोहना होजी।
थानेंतो पियारीलागे द्वारिका रे म्हांने रे पियारा लागो आप,
हांरे प्रभु आप ।।१।।अव०
आठ पटराण्यां साथ में ओ प्रभु कर रह्या सुखरा वास,
हांरे कृष्ण वास ।।२।।अव०
दोरो तो हुओ जमुना न्हांवणौ रे दोरोरे हुवो व्रजवास,
हांरे कृष्ण वास ।।३।।अव०
किणं संग तो कांना रास रे रमां रे किण संग खेलां फाग,
हांरे कृष्ण फास ।।४।।अव०
गोप्यां तो रावें प्रभु रात दिन रे राधा रा बुरारे हवाल,
हांरे प्रभु हवाल ।।५।।अव०
गोप्यां नें निराशा प्रभु मत करो रे राधा नें कंठ लगाय,

हांरे कृष्ण लगाय ।।६ ।।अव०

गोप्यां तो प्यासी दरश की रे वंसीरी शबद सुघाय,

हांरे प्रभु सुणाय ।।७ ।।अव०

हंसारी अर्जी मानलोरे लेवोनी शरण आय,

हांरे प्रभु आय ।।८ ।।अव०

७ राग श्याम कल्याण

टेर–श्रीकृष्ण ? बलिहारी जाऊं असुर निकंदा।
मोहन पर वारी जाऊं आनन्द कन्दा ।।
तेरो सुमिरन भूल गयो है जीव भयो घर धन्धा ।।श्रीकृष्ण० ।।
सुत मिंतदारा वांधलियो है डारदियो मोह फंदा ।।श्रीकृष्ण० ।।
बुधि ऐसी सुधि कर मेरी मैं चालूं तेरे छन्दा ।।श्रीकृष्ण० ।।
मोरे मन ऐसी प्रगटत है मैं रंजनी तुम चन्दा ।।श्रीकृष्ण० ।।
आगे भक्त अनेक उधारया अबकी वारी में वंदा ।।श्रीकृष्ण० ।।
हंसराज शरणागत तोरे लाज रखो नन्द नन्दा ।।श्रीकृष्ण० ।।

८ दादरा

खैंचो खैंची सांवरिया हमारी डोरी।
मथुरा जावेंगे, यमुना न्हावेंगे,
रास देखेंगे जुगल जोरी ।।१ ।।खैंचो०
गिरिराज जावेंगे, गंगा न्हावेंगे,
उज्वल करेंगे मनुष पोरी ।।२ ।।खैंचो०
गोकुल जावेंगे, वंसी सुनेंगे,
लीला देखेंगे माखन चोरी ।।३ ।।खैंचो०

वृन्दावन जावेंगे, मन भावन पावेंगे,

दरशन करेंगे राधागोरी ।।४ ।।खैंचो०

हंसराज प्रभु, करत वीनती,

चाकर रहेंगे नन्द पोरी ।।५ ।।खैंचो०

९ तर्ज कांगसियारी

म्हारा मन रा मोहन श्याम नें राधा विलमायो रे

वेद में ढूढ पुराण में ढूढयो नांहिन लाद्यो सांवरियो ।।र

पताल मेंढूंढ आकाश में ढूढ्यो ठोड़ पाई सब खालीरे ।।र

ढूंढत ढूंढत जव मैं हार्‌यो वृन्दावन नें धायोरे रे ।।र

श्री निकुञ्ज में हंसे देख्यो राधा संग मन भायो रे ।।र

१० तर्ज नागाजी री

टेर–तु गोकुल रो ग्याल मारा प्यारा रे,

मैं वृन्दावन री नागरी हो कान जी ।।१ ।।

तूं माखन मैं खांड मारा प्यारा रे,

एकण वार में पुरसिया हो श्याम जी ।।२ ।।

गोकुल तजि मत मारा प्यारा रे,

कुवजादासी कारणें हो कान जी ।।३ ।।

द्वारापुरी सुं आव मारा प्यारा रे,

द्रुपहसुता री पत डिगे हो स्याम जी ।।४ ।।

व्रज सब करे छै पुकार मारा प्यारा रे,

इन्दर राजा कापियो हो कान जी ।।५ ।।

लेवो तुम गिरवर धार मारा प्यारा रे,
अंगुली रा नख ऊपरे हो कान जी ।।६ ।।
दे दो तुम भगती अपार मारा प्रभु जी,
रात दिवस हाजिर रहुँ साम जी ।।७ ।।
कर दो वेडा पार मारा सांवरा,
सुमरे जो कोई चाव सूं हो कान जी ।।८ ।।
तुम दयालु मैं दीन मारा प्यारा रे,
पुकार पतित री सामलो हो कान जी ।।६ ।।
तुम ठाकुर मैं दास मारा प्यारा रे,
अबतो मुकती देय दो हो कान जी ।।१० ।।
तूं अंशी मैं अंश मारा सांवरा रे,
द्वैत भाव नें पूगिया हो कान जी ।।११ ।।
तुम सांवल मैं गौर मारा प्यारा रे,
एकज संचै ढालिया हो श्यामजी ।।१२ ।।
हंसो अर्ज गुजारे मारा प्यारा रे,
जुगल सेवा री दया करो हो कान जी ।।१३ ।।

( ११ )

टेर–कंई रे अरज करूं सांवरा,
अरज करूंला गरज करूंला थांरा चरणां मांहि रहूँला ।
करि की पुकार सुणी तूं धायो, ग्राह मारि गजराज वचायो ।।१ ।।
द्रुपदसुता री लाज वचाई, चीर रो ढेर कियो यदुराई ।।२ ।।

अरजुन रो रथ आपज हांक्यो, भीषम रो प्रण जुध में रांख्यो ।।३ ।।
म्हांरी दुरबधि आप निबारो, पतित जाण मोहि नाथ उवारो ।।४ ।।
हिरणाकुस सूं प्रह्लाद वचायो, खम्भ फाडि हरि रूप दिखायो ।।५ ।।
हंस हंस सूं अर्ज गुजारे, राधा कृष्ण वसो हिय म्हारे ।।६ ।।

( १२ )

जेलारे बलवीर गया कदम्बरी छांयरे,
मैं तो आबुंला भातो लेयनें ।।१ ।।
तूं छै तूछै सांवरा गोकुल रो ग्वाल रे,
मैं तो वृन्दावन री नागरी ।।२ ।।
तूं छै तूं छै नन्द जी रो लाल रे,
मैं तो वृषभानजी री लाड़जी ।।३ ।।
छौडपाछा रह्यो थाराजी वृन्दावन धाम रे,
थांरे तो कारण वन वन में फिरूं ।।४ ।।
कियो कियो कपटी तूं कुवडीसुं प्यार रे,
परणि हायोडी रै छोडी राधा बिलखती ।।५ ।।
चालां चालां मोहना मधुवन चाल रे,
रास रचावां गोप्यां साथ में ।।६ ।।
ले ले रे दिल ज्यानी म्हांने हिवडै लगायरे,
थांरी रात दिवस सेवा म्हे करां ।।७ ।।
वारवारसास्या प्रभु जी भक्तांरा काजरे,
अवतो दासीरी अरजी सामले ।।८ ।।

भवसागर गुथेलरा खावे हंसारी नावरे,

पार करो रे कृष्ण राधिका ।।६ ।।

( १३ )

दरसण देवोरे सांवरिया थांरी शरण पड्यां महाराज ।

कंस की चेरी आई पूतना विषदेवण में,

वैर किये वैवुंठ पठाई धन धन ही व्रजराज ।।दर्श० ।।

इन्दर कोप कियो व्रज ऊपर धार लियो गिरिराज ।।दर्श० ।।

गज अरु ग्राह लडै जल भीतर हारगयो गजराज ।।दर्श० ।।

करुणा गज की सुणी कान में मारलिया मछराज ।।दर्श० ।।

द्रुपदसुता की वीच सभा में वस्त्र खेंच खोई लाज ।।दर्श० ।।

आरत नाद सुणो अवलाको चीर वढायो यदुराज ।।दर्श० ।।

*



भगवद्भागवत रति निरत -

## न्यायाधीश श्रीहंसराज सिंघवी

श्रीहंसराज सिंघवी की हवेली,
त्रिपोलिया, जोधपुर ( राज. )